ईश्वरीय कार्य में बचत का खाता

जब हम पहले-पहले सेवा में मथुरा गये थे तो बाबा ने कहा, बच्ची, वो वाला खिलौना लेकर आना जिसमें राम-सीता व रावण तीनों हैं। जब सीता के सामने राम आता है तो उसे देख खुश होती है और जब रावण आता है तो मुँह फिरा लेती है, देखती भी नहीं है। बाबा ने कहा, बच्ची, यह खिलौना मैं सबको सौगात में दूंगा। बाबा ने बच्चों के ऊपर बहुत मेहनत की है। खिलौने के द्वारा बाबा बच्चों को यह सिखाता कि बच्चे, तुम भी जब माया, रावण या बुराई सामने आए तो नजरें फिरा लो, उसमें फँसो मत। बुरा ना बोलो, बुरा ना देखो, बुरा ना सुनो, यह शिक्षा देने वाला एक खिलौना भी उन दिनों मिलता था जिसमें तीन बंदर अपनी आँखों पर, मुख पर व कान पर हाथ रखे दिखाए जाते थे। बाद में बंदरों के स्थान पर तीन बच्चों वाला खिलौना निकला। इसे एक बहन लेकर आई और बाबा को दिखाया। बाबा ने कहा, बच्ची, यह तो बहुत अच्छा है, कितनी कीमत है इसकी? दादी ने कहा – ग्यारह रुपये। बाबा ने कहा, महंगा है। मैं पास में ही उपस्थित थी। बाबा ने कहा, जनक, जाओ देखो, तुम यह खिलौना कितने में ला सकती हो। मैंने कहा, बाबा, तीन रुपये में ले आऊंगी। मैं उसी दुकान वाले के पास गई। मैंने कहा, यह खिलौना तो तुमने बहुत अच्छा बनाया है। आगे तो बंदर होता था, अभी तो बच्चे बना दिए हैं, हमारे बाबा को बच्चों को सिखाने के लिए ये खिलौने चाहिएँ, बाबा बच्चों को फ्री बाँटेगा। उसने एक दर्जन दे दिये तीन रुपये प्रति एक के हिसाब से। बाबा बहुत खुश हुए। बाबा को जो चीज़ अच्छी लगे तो हमें क्या करना चाहिए? फिर मैं पूना गई। चूंकि यह खिलौना नया-नया निकला था इसलिए सब दुकानों पर था। मैंने पूछा तो दुकानदार ने कीमत थोड़ी ज़्यादा बताई। फिर मैंने कहा, तुमने यह बनवाया कहाँ से? उसने भूल से बता दिया कि पूना पनवेल से बनवाया है। बस लेकर मैं सीधी पनवेल पहुँच गई। वहाँ एक रुपये में एक खिलौने के हिसाब से बॉक्स भरकर बाबा के लिए ले आई। आप समझ सकते हैं, बाबा ने मुझे कितना प्यार किया होगा। फिर नलिनी बहन (घाटकोपर, मुंबई) ज्ञान में आई तो बाबा ने उसके चेहरे से यह खिलौना बनवाया। फिर बाबा ने कहा, कृष्ण का ऐसा चित्र बनाओ जिसमें स्वर्ग का गोला उसके हाथ में हो और नर्क को लात मार रहा हो। बाबा ने अपने हाथ से डिजाइन बनाया। फिर ऐसा चित्र बनवाया। अगर हमारा बुद्धियोग ठीक है तो हमें इकॉनामी से अच्छी चीज मिलेगी।

बुरा ना बोलो, बुरा ना देखो, बुरा ना सुनो, यह तो ठीक है लेकिन बड़ी बात है, बुरा ना सोचो क्योंकि इन सबकी जड़ बुरा सोचना है। सुना ही क्यूं जो सोचें, सोचकर फिर बोलें, यह अच्छी बात नहीं है। सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। जो असोचता बनता है वही अभोक्ता बनता है अर्थात् उसे कर्मभोग भोगने नहीं पड़ते। जैसे बाबा असोचता भी है, अभोक्ता भी है। समझके काम करो, करके जो सोचे वो कौन हुआ? जिसने पहले सोच-समझकर नहीं किया, वह कौन हुआ? एक्यूरेट करने की बुद्धि कहाँ से मिले, बाबा से मिले। बाबा से **चार बातें मिलती हैं, पहले मिलेगा प्यार फिर जब अच्छे बनेंगे तो दुआयें मिलेंगी। फिर जब देखता है कि याद भी अच्छी है, सेवा भी अच्छी है तो बाबा वरदान देता है, वरदान से सब सहज हो जाता है। वरदान मिलने से सब काम सरल हो जाते हैं। मैंने कुछ नहीं किया, बाबा का वरदान मिला है। फिर मिलती है गिफ़्ट। हमारे पास जो कुछ है, सब ईश्वरीय गिफ़्ट है।** एक बार बाबा ने मुझे अपने पास बुलाया, कहा – बच्ची दिल करता है कि तुझको कुछ दूं। मैंने कहा – आपने सब कुछ तो दे ही दिया, अब आपके पास क्या है देने के लिए? तब बाबा ने बहुत सारा अलौकिक स्नेह दिया। इस स्नेह में ही सब कुछ समाया हुआ है। प्यार माँगो नहीं, किसी से भी नहीं माँगो, अपने आप दिल से प्यार मिले, दुआयें मिलें, वरदान मिलें। ऐसे बच्चे ही बाबा के नयनों के तारे हैं। ❑